अथर्ववेद एवं परिवार–कल्याण समीक्षा

अंजली कुमारी*

परिवार–कल्याण संबंधी विचार यद्यपि पूर्णतया नवीन कल्पना या योजना है तथापि इस विषय के कुछ मूलभूत सिद्धान्त अथर्ववेद में भी उपलब्ध होते हैं। अथर्ववेद में कुछ ऐसे मन्त्र मिलते हैं जिनका संबंध परिवार–नियोजन–प्रक्रिया से मिलता–जुलता है। यथा–क्लीबकरण प्रक्रिया। इस प्रक्रिया में पुरुषों के ही क्लीबीकरण का प्रत्यक्ष निरूपण पाया जाता है। परोक्ष रूप में स्त्रियों का भी बन्ध्याकरण इन्हीं विधियों का आश्रय लेकर किया जा सकता है। यथा–

1. पुरुषों के शुक्रवहोच्छेद (Vasectomy) और
2. स्त्रियों में वीजवाहिनी उच्छेदन (Tubectomy) द्वारा बन्ध्याकरण चिकित्सा।

इस प्रकार अथर्ववेद में बन्ध्याकरण करने की तीन विधियों का निर्देश किया गया है–

1. वृषण–भX द्वारा 2. शल्यचिकित्सा द्वारा, 3. औषधि द्वारा।

1. वृषणभX द्वारा–बन्ध्याकरण–चिकित्सा पद्धति का वर्णन प्राचीन काल से चला आा रहा है। इसका वर्णन अथर्ववेद में मिलता है। उस युग में व्यभिचारी–पुरुषों का अण्डकोष तोड़ने एवं उसके ऊपर स्थित दोनों शुक्रवाहिनी नाड़ियों का भेदन करने की प्रथा प्रचलित थी। इस प्रकार पुरुषों को क्लीव करते थे। वृषण तोड़ देने एवं शुक्रवाहिनियों को काट देने से पुरुष–क्लीव हो जाता था। आज भी पशुओं को क्लीब करने के लिए पशुचिकित्सक उसके वृषण को यन्त्र द्वारा तोड़ देते हैं उसी प्रकार से मनुष्यों के वृषण तोड़ देने से मनुष्य भी क्लीब हो जाते है। यथा–

यथा नर्ड कशिपुने स्त्रियों भिन्दन्यश्मना। एवा भिनﬂि ते शेपोऽमुष्या अधिमुष्कयोः।।
शौ0–6/130/5

2. शल्यचिकित्सा द्वारा–इतना ही नहीं अथर्ववेद में शल्यकर्म द्वारा भी वन्ध्याकरण करने का उल्लेख प्राप्त होता है। कहा गया है–हे पुरुष! तेरे वृषण के ऊपर जो दैवकृत दो शुक्रवह नाड़ियाँ स्थित हैं; उन दोनों नाड़ियों को मैं शम्या–शस्त्र से छेदन या भेदन करता हूँ। यथा–

क्लीवं................................। भिनत्त्वाण्डयौऽ...................।।
ये ते नाडK्ऽदेवकृते मयोस्तिष्ठति वृष्ण्यम्। ते ते भिनﬂि शम्यामुष्या अधिमुष्कयोः।।
शौ0–6/138/2,4

उक्त वेद के मंत्र से सुस्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि वृषण के ऊपर जो शुक्रवह नाड़ियाँ स्थित हैं, उनका छेदन कर देने से शुक्र का संबंध–विच्छेदन हो जाता है। जब तक शुक्र और शोषित का संबंध नहीं होगा, तब तक गर्भ भी स्थापित नहीं होगा।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी शल्यचिकित्सक उक्त–विधि द्वारा ही बन्ध्याकरण करते हैं। चिकित्सक पुरुष के दोनों शुक्रवह नाड़ियों को काटकर बाँध देते हैं तथा पुरुष–बन्ध्य हो जाते हैं। इसी प्रकार स्त्रियों के डिम्बवह स्रोतों को काटकर अवरुद्ध कर देते हैं जिससे स्त्रियाँ बन्ध्या हो जाती हैं। आधुनिक वैज्ञानिक भाषा में पुरुष–बन्ध्याकरण को Vasectomy और स्त्री बन्ध्याकरण को Tubectomy कहते हैं।

3.औषधि द्वारा–अथर्ववेद शौनकीय एवं पैप्पलाद शाखा में ''क्लीबकरणी''नामक औषधि का भी उल्लेख प्राप्त होता है। इस औषधि का सेवन करने से पुरुष क्लीब हो जाता है।[1] अब प्रश्न यह उठता है कि यह औषधि कन्द, मेल, वल्कल, पत्र, पुष्प, फल या निर्यास आदि में किसका प्रयोग किया जाए। यहाँ पर गुग्गुलु का ग्रहण अधिक संभाव्य है। गुग्गुलु को आयुर्वेद में शुक्रनाशक कहा भी गया है क्योंकि इसके अतियोग से क्लीबता उत्पन्न होती है।[2] मुनि वाग्भट ने भी लिखा है–''यदि गुग्गुलु का अति मात्रा में सेवन किया जाए तो मुखशोष, क्लीवता अंग शैथिल्यता आदि उत्पन्न होता है।''[3] श्रृगांरहाट में चतुर परिचारक ने कहा है कि मैं रनिवास में रहता हूँ परन्तु मुझसे रानियों को कोई भय नहीं है, क्योंकि मैं ''गुग्गुलु औषधि'' का नित्य प्रति सेवन करता हूँ। जिससे मेरी पुंसत्त्वशक्ति क्षीण हो गई है।''[4] इस वचन से भी यह सुस्पष्ट होता है कि ''गुग्गुलु'' का प्रयोग प्राचीन काल से क्लीवता उत्पन्न करने के लिये किया जाता था। इसके अतिरिक्त ''गुग्गुलु औषधि'' के पर्याय नामों में भी ''क्लीब'' शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है।[5] इस प्रकार गुग्गुलु क्लीबकरणार्थ सर्वोत्तम औषधि सिद्ध होती है।[6] आचार्य पं0 विश्वनाथ द्विवेदी के विचारानुसार यह वत्सनाभजातीय कोई निर्विष कन्द है जिसका प्रयोग पहाड़ी लोग क्लीबकरणार्थ करते हैं।

निष्कर्ष–अथर्ववेदीय इस अध्ययन के आधार पर स्पष्टतया यह कहा जा सकता है कि पुरुष क्लीवीकरण अथवा स्त्री बन्ध्याकरण की प्रक्रिया या योजना अत्यन्त प्राचीन काल से भारत में चली आ रही है। इसी का विकसित रूप आधुनिक शल्यकर्म ''वासेक्टामी'' या ''ट्यूबेक्टोमी'' के नाम से बन्ध्याकरण में व्यवहृत हो रहा है। यह चिकित्सा शास्त्र का कोई नवीन आविष्कार नहीं है।

सन्दर्भ–

1. शौ0 6/138/1–2, पै0 1/68/1–5, 20/29/4
2. द्र0वि0भा0 2, पृ0 56–57
3. ''गुणनिधिरपि कुर्यात् सोऽतिमात्रोपयुक्त। स्तिमिरवदनशोषक्लीवताकार्श्यमोहन्।।'' अं0सं0 30,अ0 49/178
4. श्रृगांरहाट : डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल एवं डॉ0 मोतीचन्द्र।
5. द्र0वि0भा0 2 पृ0 57
6. अ0 भै0सू0 अ0 ''भेषज–खण्ड'' अ0 2, पृ0 310–311 (शोध प्रबन्ध) सन्1981।

***शोध छात्रा मगध विश्वविद्यालय बोध गया**